राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.0
तिलिस्मी
ओलम्पाक
भोकाल
एक
सनसनीखेज
कॉमिक्स

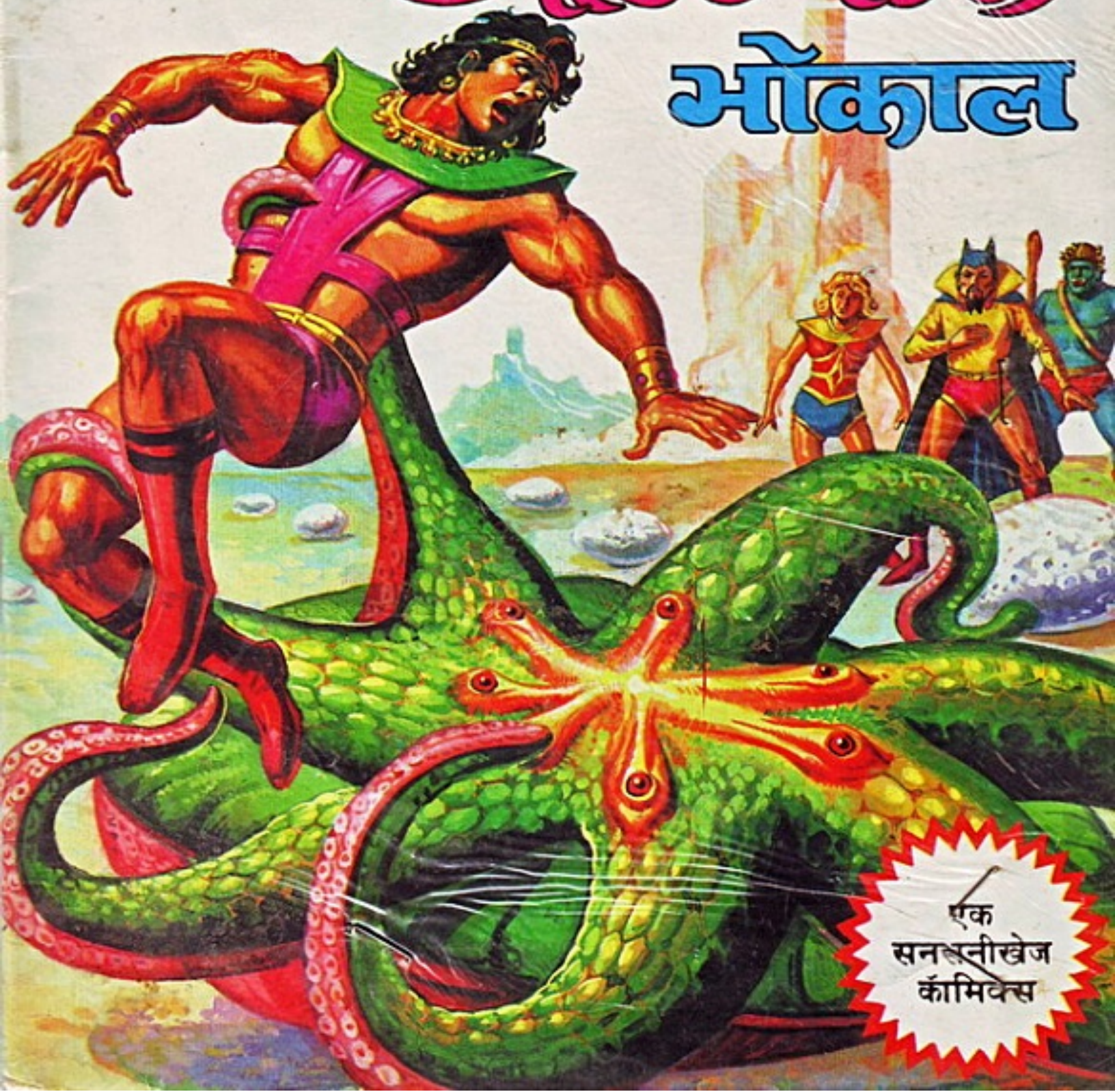

भोकाल सीरीज

तिलिस्मी ओलम्पाक

● लेखक : संजय गुप्ता
● चित्रांकन : कदम स्टुडिओ
● संपादन : मनीष चंद्र गुप्त.

इसके साथ ही वहां छा गई एक गहरी खामोशी जिसे तोड़ तुरीन ने —

भोकाल! हमें बताओ कि अब हमें क्या करना है?

तलाश

तलाश किसकी?

तिलिस्मी ओलम्पाक की।

भोकाल की सम्मोहक आवाज ने सबको बांध लिया था-

हां, महाबली फूचांग के ग्रह के इष्टदेव खजूरा ने इस ग्रह पर तिलिस्मी ओलम्पाक का निर्माण किया था और महाबली फूचांग चाहते हैं कि हम उसे ढूंढे और उसका तिलिस्म तोड़ दें।

और इसके बदले हमें क्या मिलेगा?

बोल उठा भोकाल —

हमें मिलेगा सम्मान। हम में से जो भी वीर तिलिस्म तोड़ेगा उसे महावीर की उपाधि मिलेगी और मिलेगा तिलिस्मी ओलम्पाक में कैद खजाना।

मुंह खुले रह गए उनके —

खजाना!

हां, बहुत बड़ा खजाना।

लेकिन खजाना क्या यूंही मिल जाया करता है?

नहीं! बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं। बड़ा खजाना बड़े पापड़ —

म्याऊँ sss

मौत बना वह सरीसृप चारों के सपने तोड़ने के लिए उनके सिरहाने तक पहुंच चुका था।

चारों ऐसे उछलकर खड़े हुए जैसे उनके नीचे की धरती जल उठी हो —

क्रिंया या आ

क्या बला है यह?

हे भगवान यह क्या?

वाह!

कपाला ड्र गई बेचारी

शूतान कूद पड़ा चारों के बीच से निकलकर मैदान में-
इससे मैं निपटता हूं।
शूतान क्या इस सरीसृप को बांध पाएगा।
कुछ किया तो उस जादूगर ने –
और तभी वहां एक और सरीसृप पैदा हो गया...
सम्मोहन से तैयार एक नकली सरीसृप-
और असली सरीसृप एक ऐसे सरीसृप से लड़ रहा था
जो कि वहां था ही नहीं–
क्रिया SSSSSS
हा हा हा भई वाह, देखो कैसे उछल रहा है।
हा हा हा मजा आ गया। खूब बेवकूफ बनाया इसे शूतान ने।

क्रिंया

किन्तु तभी असली सरीसृप की पूंछ ने कहर ढा दिया—

हाय!

शैतान की हड्डियां चीख-चिल्ला उठी। और उसका सम्मोहन टूट गया।

सरीसृप को जैसे होश आया—

धप्प

उफ! हाय मार डालारे!

सरीसृप की नजर पड़ी तुरीन पर—

क्रिंया ssssssss

आ भई! हम भी अपनी शक्ति आजमा लें तुझपर।

उसने अपनी पूंछ उछाली—

बड़ा कड़वा अनुभव हुआ सरीसृप को।

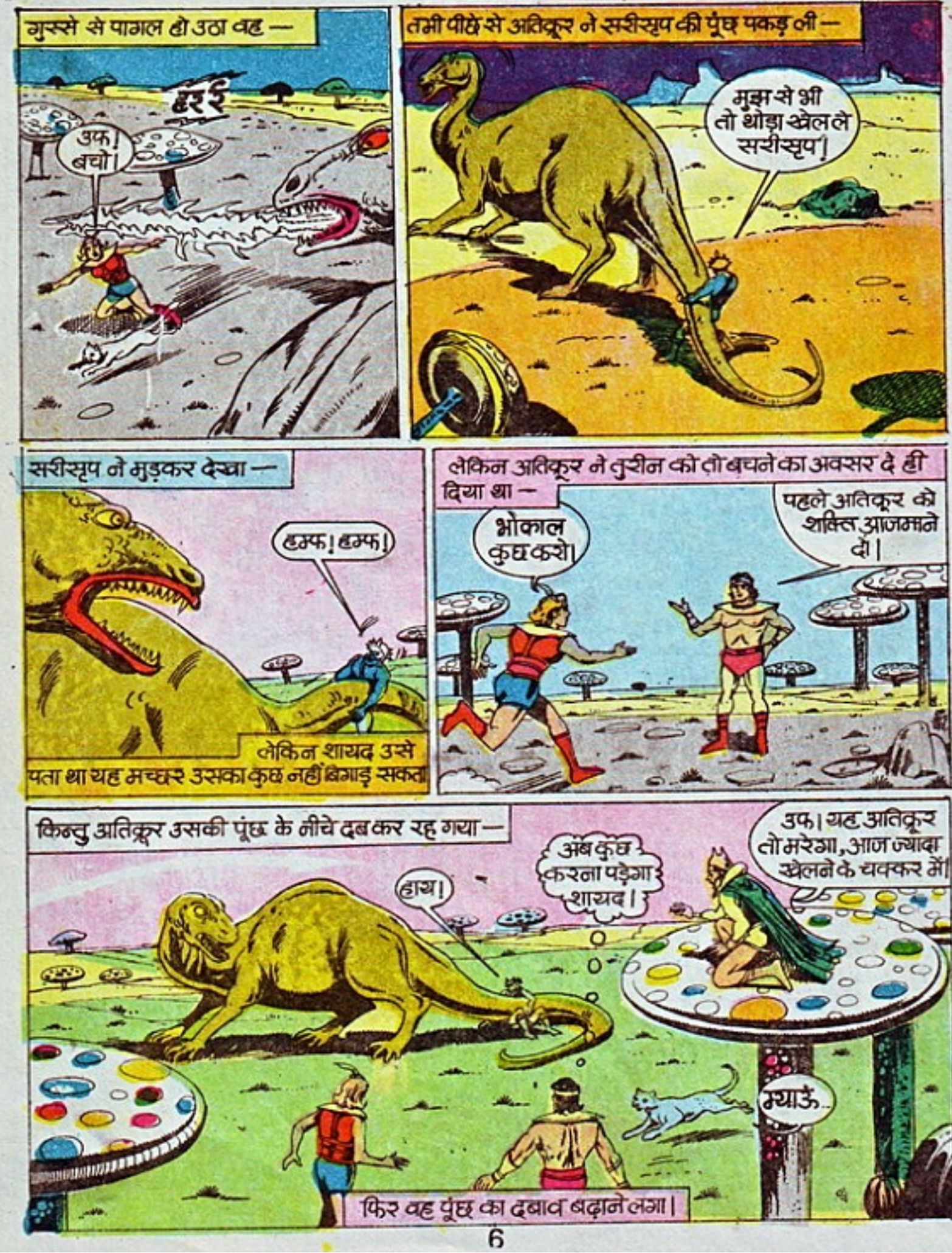
गुस्से से पागल हो उठा वह —
हरर
उफ! बचो!
तभी पीछे से अतिक्रूर ने सरीसृप की पूंछ पकड़ ली —
मुझ से भी तो थोड़ा खेल ले सरीसृप!
सरीसृप ने मुड़कर देखा —
हम्फ! हम्फ!
लेकिन शायद उसे पता था यह मच्छर उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता
लेकिन अतिक्रूर ने तुरीन को तो बचने का अवसर दे ही दिया था —
भोकाल कुछ करो!
पहले अतिक्रूर को शक्ति आजमाने दो!
किन्तु अतिक्रूर उसकी पूंछ के नीचे दब कर रह गया —
हाय!
अब कुछ करना पड़ेगा शायद!
उफ! यह अतिक्रूर तो मरेगा, आज ज्यादा खेलने के चक्कर में!
म्याऊं
फिर वह पूंछ का दबाव बढ़ाने लगा!

दबाव बढ़ता जा रहा था पूंछ का।

दम घुटता जा रहा था अतिक्रूर का।

तभी-

धड़ाक

एक जबरदस्त ठोकर टकराई सरीसृप के थूथन पर।

सरीसृप ने अपना विशाल जबड़ा खोला और –

उफ! भोकाल बचो।

लेकिन तब तक सरीसृप का जबड़ा बंद हो चुका था –

जैसे समय रुक गया हो –

और –

सरीसृप के जबड़े के अंदर ही...
भोऽऽऽकाऽऽऽऽल
आलोप--
भोकाल बन गया।

क्रियाSSS

अतिक्रूर भी स्वतन्त्र हो गया –

धन्यवाद मित्र!

तत्पश्चात –

वाह! भोकाल वाह! शाबास।

म्याऊं

भोकाल! श्री गणेश ही ऐसा भयानक हुआ है। जाने आगे क्या होगा?

मुश्किल यह है कि हम वापस भी नहीं जा सकते।

एक बार तो मैंने सोचा कि भोकाल तो गया।

तुम सब बहुत जल्दी डर गए।

और फिर चारों आगे बढ़ चले।

इधर पृथ्वी पर –

वाह! बहुत खूब।

मजा आ गया। यह खौफनाक खेल देखकर।

मुझे भोकाल बहुत अच्छा लगा।

क्या रोमांचक लड़ाई थी।

सभी राजा-महाराजा तिलिस्मी ओलम्पाक में खेले जा रहे उस खौफनाक खेल का आनंद ले रहे थे।

विकासनगर में भी राजा विकास मोहन, रानी मोहिनी, राजकुमारी श्वेता मोहन, राजकुमार अंकित मोहन, महामंत्री चंद्रमणि व सेनापति प्रवीनसिंह के साथ बैठे वह खेल देख रहे थे।

काश! मैं भोकाल होता तो सबके पेट का खून निकाल देता।

मैं भी तिलिस्मी ओलम्पाक में जाऊंगी।

बिना मदिरा के यह लोग वहां रहते कैसे होंगे?

महाराज! आपके मित्र राजा फूचांग ने वाकई दिलचस्प चीज बनाई है।

यह लोग समझ नहीं रहे हैं, मुझे तो लगता है, यह फूचांग कोई गहरा षड्यंत्र रच रहा है।

हां प्रिय, तबियत प्रसन्न हो गई। तुरीन को भी तो देखो, कैसी साहसी सुन्दरी है।

किन्तु आने वाले बड़े तूफान से वे सभी अनभिज्ञ थे।

राजकुमारी श्वेता मोहन के छोटे से मस्तिष्क में आंधियां चल रही थीं—

मुझे तिलिस्मी ओलम्पाक में जरूर जाना है।

किंतु वह जा किधर रही थी।

वह ठिठकी—

हमें अंदर जाना है, महाबली फूचांग से मिलने।

नहीं, अभी तुम अंदर नहीं जा सकती। महाबली फूचांग अभी अति व्यस्त हैं।

उफ! यह तो फूचांग का कक्ष है।

तुरन्त पलट गई वह बालिका, किंतु मन में यह विचार लिए—

मैं अभी मिलूंगी फूचांग से और जरूर मिलूंगी।

पता नहीं क्या करना चाहती है यह।

जल्दी ही वह राजमहल की छत पर आ गई। ठीक उस जगह जिसके नीचे फूचांग का कमरा था—

हा हा हा विकास मोहन!

राजा विकास मोहन! तुम सब मेरे जाल में फंस चुके हो और जल्दी ही मैं तुम्हारा सर्वनाश कर दूंगा।

खून खौल उठा श्वेता मोहन का फूचांग के जहरीले शब्द सुनकर और...

वह बच्ची अपने आपको रोक ना सकी —
फूचांग दुष्ट कमीने!
लेकिन वह बच्ची उस शैतान से टकराई थी, जो कि सुरक्षा घेरे में कैद रहता है —
गलत हाथों में पड़ गई बच्ची—
हाहाहा फूचांग से टक्कर हाहाहा मुझसे बढ़कर शक्तिशाली तीन लोकों में कोई नहीं मूर्ख लड़की।
बड़ा शौक है तुझे तिलिस्मी ओलम्पाक जाने का। अब जाना तो पड़ेगा ही, क्योंकि तू बहुत कुछ जान जो गई है।
शैतान के मन में शैतानी विचार—
हाथ उठा उसका और —
गई बकरी शेर की मांद में।
एक मासूम जिन्दगी को खौफनाक मौत के शिकंजे में भेज रहा था नीच।
हा हाहा अब लोगों को इस खौफनाक खेल में और मजा आएगा।

डरी और सहमी हुई सी श्वेता पहुंच गई अजीबो-गरीब दुनिया में-

और वह भी अकेली।

धीरे-धीरे उस पर दहशत छाने लगी-

उंह! सुबुक माताश्री! पिताश्री! सुबुक।

लेकिन सिसकारियां दबकर रह गईं।

उस खौफनाक दिल को दहला देने वाली आवाज में-

घूंऽऽऽ घूंऽऽऽ घूंऽऽऽ घूंऽऽऽ

डर-

भय-

आतंक-

दहशत-

कदम जड़ होकर रह गए। आखें फट गईं। जुबान तालू से चिपक गई -
सामने दृश्य ही ऐसा था-
धूऊऽऽऊऊऽऊऽऽधूऽऽऊऽऽ

कोई और भी था जिसने यह दृश्य देखा था-

म्याऊं

उल्टे पांव दौड़ ली वह-

सिर्फ बिल्ली ही नहीं मानव भी पृथ्वी पर यह दृश्य देखकर रोमांचित हो उठे थे-

उफ! यह बच्ची यह कौन है?

यह बच्ची यहां कैसे पहुंच गई?

हे ईश्वर इसकी रक्षा कर।

और विकासनगर, वहां तो चीख-पुकार मच गई-

मेरी बच्ची श्वेता!

ढूंढो पूरे महल में श्वेता को। वहां कैसे पहुंच गई?

मम्मी! दीदी को बचाओ। अब मैं उससे कभी नहीं लड़ूंगा।

उफ! यह भयानक जानवर। काश, मैं इस समय वहां होता।

भयंकर जीव अब तक श्वेता के सिर पर आ धमका था।
थूऊ थू ऊ
नहींईईऽऽऽ मुझे मत मारो।
तभी-
हे मेरे ईश्वर! यह तो राजकुमारी श्वेतामोहन है।
महाबली अतिक्रूर ने उसे उठा लिया -
शर्म नहीं आती। बच्ची पर हमला कर रहा था।
और उसे उछाल फेंका -
थू ऊं ऊ
धड़ाक
वह पलटा फिर उसकी ध्वनि तीव्र, अतितीव्र होती चली गई -
ऽऽऽधऊं ऽऽऽ थूऊ ऽऽऽ
सभी असमंजस में थे -
क्या हो गया इसे?
और क्या हो गया। टूट-फूट गया, इसलिए मातम मना रहा है। साले की आंखें भी तो नहीं हैं, जो सम्मोहित ही कर लेता।

पृथ्वी पर विकासनगर में-
मुझे मेरी बेटी चाहिए महाराज! ऊहूं हूं
धीरज रखो प्रिय! हम कोशिश कर रहे हैं। वैसे भी अब वह सही हाथों में पहुंच गई है।
परन्तु कब तक महाराज! अभी तो वह सभी संकट में है।
मुझे मेरी बहन चाहिए पिताश्री! ऊ ऊ ऊ
और संकट वाकई अभी नहीं टला था-
यह मेरी तरफ बढ़ रहा है। देखता हूं यह क्या नुकसान पहुंचा सकता है।
भयंकर जीव ने अपनी सूंड अतिक्रूर की टांग से चिपका दी और -
अह आऽऽऽ
अगले ही क्षण उसने एक जबरदस्त ठोकर भयंकर जीव के मुंह पर जड़ दी -
आह! यह तो साक्षात मौत है। इससे बचो, मेरी आधी शक्ति खींच ली इसने।
अतिक्रूर ही जानता था कि उसकी जबरदस्त ठोकर खाकर भी कितनी मुश्किल से वह भयंकर जीव उसके शरीर से अलग हुआ था।
सब एकदम सजग हो गए, वहां से भागने को तैयार-
मुझे पकड़ लिया इसने तो मैं कैसे बचूंगा?
हमें यहां से दूर हट जाना चाहिए।
लेकिन भागेंगे कैसे?

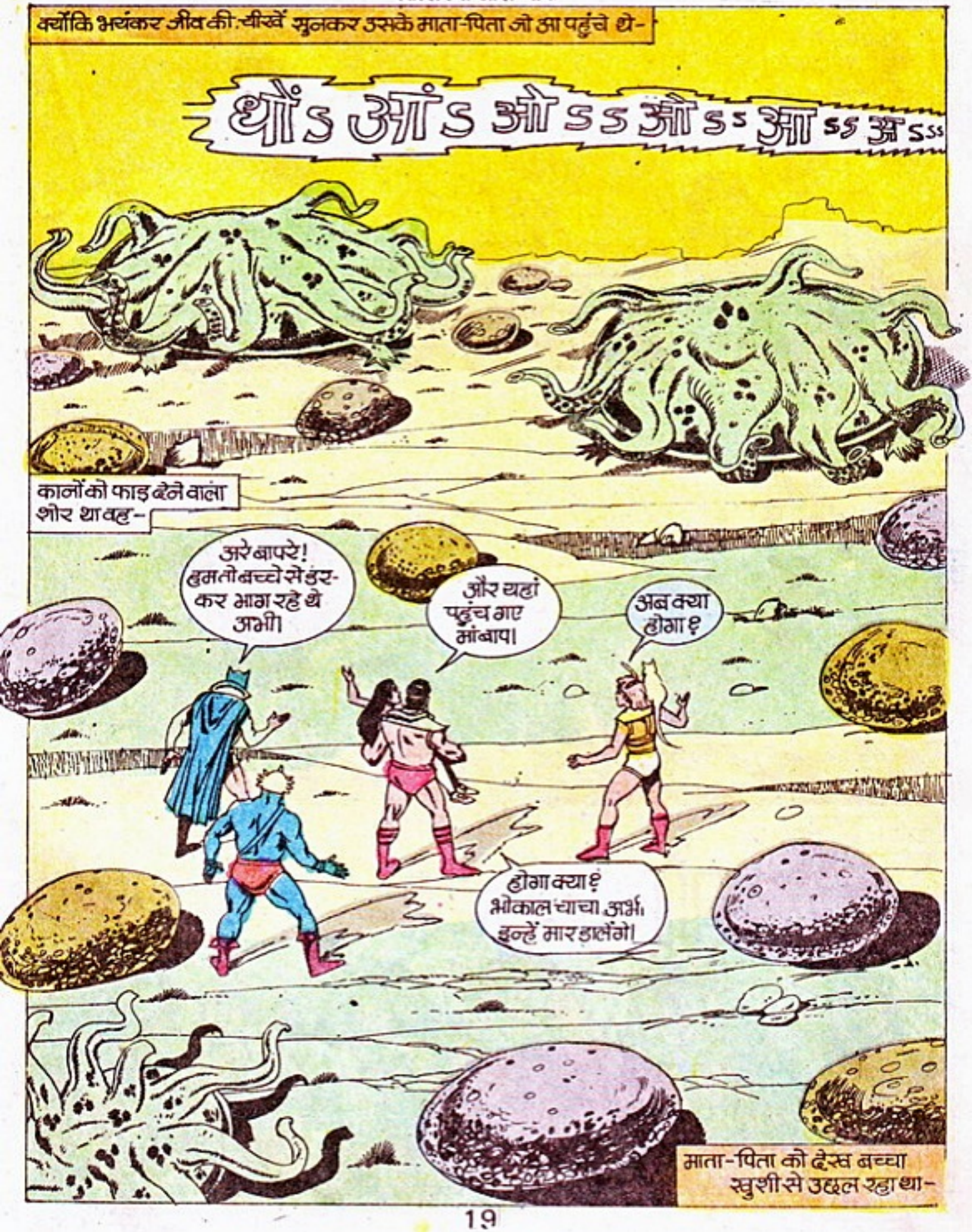

क्योंकि भयंकर जीव की चीखें सुनकर उसके माता-पिता जो आ पहुंचे थे-
थौंऽ ओंऽ ओऽऽ ओऽऽ आऽऽ आऽऽऽ
कानों को फाड़ देने वाला शोर था वह-
अरे बापरे! हम तो बच्चे से डर-कर भाग रहे थे अभी।
और यहां पहुंच गए मां बाप।
अब क्या होगा?
होगा क्या? भोकाल चाचा अभी इन्हें मार डालेंगे।
माता-पिता को देख बच्चा खुशी से उछल रहा था-

तुरीन! संभालो इसे। बच्ची अब तुम्हारे सुपुर्द है।
श्वेता को गोद में लेते ही -
चल कपाला
म्याऊं
किन्तु यह ये क्यों नहीं समझते कि मेरा क्या होगा?
आलोप-
भो ऽऽ काऽऽऽल

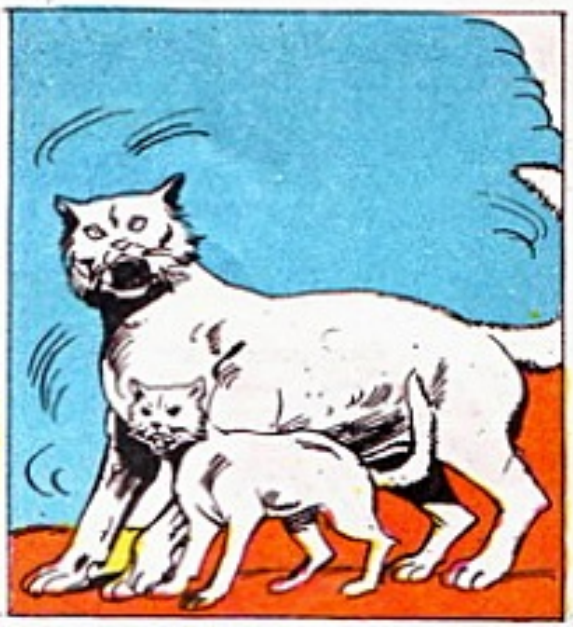

बन गया भोकाल।
उधर पृथ्वी पर चंद्रगढ़ का राजा सूर्यसेन-
वाह भाई! फुचांग खुश किता!
सुजानगढ़ का राजा परकाल देव-
मैं तो यह देख-देखकर पागल हो जाऊंगा
चित्तौड़गढ़ का सम्राट डबरालदेव-
इतने मजे कभी नहीं आये।
सोकामपुर का राजा चकटालसिंह-
इस दुनिया का सबसे बड़ा मनोरंजन यही है।
जूनागढ़ का राजा खुजाला-
मन करता है बस तिलिस्मी ओलम्पाक को ही देखता रहूं।
मोहकमपुर का सम्राट चोपड़राजा-
इस भोकाल का मुंह चूमने का मन करता है।
खोबामपुर का राजा भोकलाटकाल-
मैं तो मर जाऊंगा अगर यह खेल खत्म हो गया तो हां।

जंग शुरू हुई -
भोकाल तुम्हें नहीं छोड़ेगा आदमखोरो।
भौऊ ssss

भोकाल की तलवार चल पड़ी -
खचाक

कपाला पर सवार तुरीन भी पीछे न थी -
शाबास तुरीन दीदी!
चिर्र

लेकिन तभी -
उफ!
दीदी बचो!
म्याऊं sss
कपाला भयंकर चीत्कार कर उठी

और भोकाल भी फंस गया भंयकर जीव की सूंड में।
भो अ ओ
किन्तु अभी–
... वहां था अतिक्रूर
छोड़ दो इन्हें जालिमो।
कुछ ही पलों में उसने कई चट्टानें फेंक मारीं–
हाय!
अरे यह क्या?
हां वह चट्टानें नहीं थीं, वह थे भयंकर जीव के अण्डे
चारों तरफ से भयंकर जीव उसकी तरफ बढ़ने लगे–
भाग बेटा शैतान, अब नहीं छोड़ेंगे यह तुझे। यह तो बढ़ते ही जा रहे हैं।
उफ! यह तो और मुसीबत बुला ली मैंने।
तभी–

अतिक्रूर की दृष्टि एक खास चीज पर पड़ी-

हाएं ! यह क्या ? यह जीव मेरे फेंकने से उलटा हो गया था और उलटते ही मर गया। यानी, यानी ...

मैं अगर इन सभी जीवों को उलट दूं तो यह सब मर जाएंगे।

और विचार आते ही अतिक्रूर भयंकर जीवों पर टूट पड़ा -

अब नहीं बचते तुम बेटा !

रास्ता छोड़ो! मुझे अभी तुम्हारे मां-बाप से भी निबटना है।

अंततः वह उस विशालकाय भयंकर जीव के सामने था जिसने भोकाल को दबोचा हुआ था-

मुझे इसकी सूंड से भी बचना है।

तेजी से भागता अतिक्रूर भयंकर जीव से टकराया -
मैं आ गया भोकाल! इस भयंकर जीव का काल!
और पूरी शक्ति लगाकर उसने उस विशालकाय जीव को उलट ही दिया -
धन्यवाद अतिक्रूर!
भोकाल को आजाद कराकर अतिक्रूर दूसरे भयंकर जीव की तरफ दौड़ा -
अब तेरी बारी है दुरात्मा!
लेकिन -
आह!
किन्तु अब भोकाल आजाद था -
भोऽओ ऽऽ ओऽऽऽ
भयंकर चीत्कार कर उठा भयंकर जीव। आखिरी चीत्कार।

मारा गया शैतान।
चलो मैं भी बच गया
आओ, हम सब कपाला को देखें।

कपाला जो अब अपना स्वरूप बदल रही थी -
तूरीन! कपाला को क्या हुआ?
वह अपने आप ठीक हो जाएगी भोकाल, लेकिन थोड़ा वक्त लगेगा।

कुछ देर बाद -
आप यहां कैसे आ गईं राजकुमारी श्वेता?
क्योंकि मुझे आपसे मिलना था भोकाल चाचा, और आप मुझे आप ना कहें केवल श्वेता कहें। नहीं तो मैं नाराज हो जाऊंगी।
ओहो! मेरी गुड़िया नाराज हो जाएगी।
मुझे तो भूख लगी है बहुत जोर की।
मैं अपनी आंखों में रोज करेले का रस डालता हूं यहां तो करेला भी नहीं है तू खाने की बात कर रहा है।

अरे! भोजन के बारे में तो मैं भी पूछना भूल गई थी। हमें भोजन कैसे मिलेगा?
हां, भोकाल चाचा! हमें भी भूख लगी है।

मुस्कराया भोकाल और -
लो, यह थैली। मुझे महाबली फूचांग ने दी थी। इससे जैसी भी इच्छा करो वैसा ही भोजन मिलेगा।
चलो एक समस्या तो सुलझी।

सबने अपनी इच्छा का भोजन मंगवाया -

वाह! इस थैली से अब करेला भी मिल जाएगा!

हा हा हा

और सबने अपनी भूख मिटाली।

इधर पृथ्वी पर -

महाराज! आप फूचांग के पास चलिए। वह जरूर हमारी बेटी हमें वापस लादेगा।

ठीक कहती हो तुम प्रिय! चलो हम ऐसा ही करते हैं।

राजा विकासमोहन महारानी के साथ फूचांग से मिलने चल पड़े --

अगर मेरी बच्ची को कुछ हो गया महाराज तो मैं फूचांग का लहू पी जाऊंगी!

शांत प्रिय शांत! फूचांग श्वेता को वहां से जरूर वापस ले आएगा!

उधर फूचांग --

मैं सोच चुका हूं तुम्हें क्या जवाब देना है राजा विकासमोहन। मैं राजकुमारी को वापस ला सकता हूं, लेकिन नहीं, क्योंकि तब खेल का मजा कम हो जाएगा।

अगले ही पल राजा विकासमोहन और महारानी ने कक्ष में प्रवेश किया -

फूचांग मित्र, फूचांग!

आओ मित्र विकास मोहन! फूचांग के कक्ष में स्वागत है।

मित्र! हमारी पुत्री राजकुमारी श्वेता...

हां मित्र! हम खुद तुम्हें यही बताने आने वाले थे।

फूचांग ने चाल खेली, कैसी जबरदस्त चाल

... वह मेरे पास आई और बोली --

फूचांग चाचा हमें भी तिलिस्मी ओलम्पाक भेज दो।

क्या कहती हो श्वेता बेटी! तुम्हें तो पता ही है कि वहां केवल दिग्गजवीर ही जा सकते हैं।

... नहीं मानी वह। मेरी एक ना सुनी उसने...

नहीं! हम भी वहां जाएंगे, जरूर जाएंगे वरना...

वरना क्या?

... उबल ही तो पड़ा मैं...

वरना हम आत्महत्या कर लेंगे। यह खंजर अभी अपनी छाती में उतार लेंगे।

नहीं ऐसा ना करना!

... और मुझ जैसा बलवान उस बच्ची के सामने भीख मांग बैठा, उस बच्ची के प्राणों की भीख...

सुनो बेटा! अपने माताश्री, पिताश्री से तो आज्ञा ले लो!

नहीं, आप अभी निर्णय लें, नहीं तो ...

... हार गया मैं महाबली फूचांग उस बच्ची से हार मान गया ...

ठीक है पुत्री! हम बेबस ना होते तो कदापि तुम्हें वहां ना भेजते। चाहे हमारी जान क्यों ना चली जाती।

दरिन्दा कितना बड़ा चालबाज निकला।

अब तुम ही बताओ कि तुम मेरी जगह होते तो क्या उतार लेने देते उसे खंजर अपनी छाती में?

नहीं! मित्र कदापि नहीं किन्तु...

खुद को कोरा साबित कर लिया उसने दोनों की नजरों में।

... अब वह वापस कैसे आएगी?

यही तो दुख है मित्र कि अब मैं भी उसे वापस नहीं ला सकता। तिलिस्मी ओलम्पाक में गया मानव केवल तिलिस्म के टूटने के बाद ही वापस आ सकता है।

अब तो तिलिस्मी ओलम्पाक तोड़ने वाला विजेता ही उसे वापस ला सकता है।

दोनों टूटे हुए दिल और मरे हुए मन से वापस चल पड़े -

महाराज! उससे बोलो कि वह मुझे भी वहीं भेज दे, मेरी पुत्री के पास।

धीरज रखो रानी! हमें विश्वास है कि भोकाल जल्दी ही उस तिलिस्म को तोड़ देगा।

राजदरबार में -

महाराज! आपसे मिलने के लिए बहुत से देशों के राजदूत इंतजार कर रहे हैं।

उन्हें भेज दो।

शीघ्र ही अन्य देशों के राजदूत वहां पहुंचने लगे -

महाराज विकास मोहन को चूड़ागढ़ के राजा शमकशम का प्रणाम।

प्रणाम स्वीकार। कहो राजदूत, कैसे आना हुआ?

महाराज! हमारे देश की आधी आय का हिस्सा आपके खजाने में जमा करा दिया गया है। निवेदन यह है कि हमें कुछ और दूरदर्शन दर्पण दिए जाएं, क्योंकि हमारे महाराज प्रजा को भी यह खेल दिखाना चाहते हैं।

इसी तरह की फरमाइशों के साथ कई देशों के राजदूत वहां पहुंचे थे -

महाराज! हमारे महाराज ने इस जबरदस्त आयोजन की बधाई भेजी है।

महाराज! इस साल की संपूर्ण आय मिथिला नरेश ने खेल से अति प्रसन्न होकर आपको नजर की है।

इस अभूतपूर्व खेल के लिए लिबास-गढ़ की संपूर्ण जनता ने आपको बधाई भेजी है।

विकासगढ़ का कोषागार छोटा पड़ने लगा वह धन समेटते-समेटते और छोटा पड़ने लगा राजा विकासमोहन को राजकुमारी श्वेता के खोने का दुख -

कोषाध्यक्ष! महल में दस और कोषागार बनाए जाएं। शीघ्र अति शीघ्र!

हा हा हा! मित्र फुचांग धन्यवाद! हम बहुत प्रसन्न हुए तुमसे!

मूर्ख!

प्रिय बच्चो, चित्रकथा आपको कैसी लगी, यह जरूर लिखें: 'संजय गुप्ता', 1603 दरीबा कलां, दिल्ली-6

समाप्त

प्रिय पाठको! आपके मनोरंजन के खजाने 'भोकाल' सीरीज में नित नयी घटनाओं के साथ 'राज कॉमिक्स' नयी- नयी कहानियां पेश करेगी। यह कहानियां अपने आप में संपूर्ण होंगी यानी कोई भी कॉमिक्स किसी दूसरे कॉमिक्स का पार्ट नहीं होगा। अब तक आप इस क्रम की दो कॉमिक्स पढ़ चुके हैं--

1 खौफनाक खेल

2 तिलिस्मी ओलम्पाक। और अब आपके इन प्रिय पात्रों की-

आगामी नयी कॉमिक्स है-

भोकाल

इस कॉमिक्स के साथ
भोकाल का आकर्षक स्टीकर
मुफ्त

हमारा वादा है कि इस क्रम की सभी चित्रकथाएं आपका खूब मनोरंजन करेंगी।